गर्भावतरण

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

एक बार आषाढ़ बदी दुतीया की रात्रि के पिछले प्रहर में रानी मरुदेवी ने पूरे सोलह सपने देखे ।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः
माता, मंगल प्रभात हुआ है, स्नान कीजिए।
उठो मात ! खिल रही है उषा, तीर्थवन्दना स्तवन करो। आर्त रौद्र दुर्ध्यान छोड़कर, श्री जिनवर का ध्यान करो ।।
हाँ सखी ! आज मैंने बड़े सुन्दर सोलह स्वप्नदेखे हैं । पहले तुम्हें नहीं बताऊंगी। स्नान करके अभी राजदरबार में चल कर पतिदेव को वे सभी स्वप्न बताकर उनका फल पूछूंगी ।
आओ देवि ! आज आप सबेरे-सबेरे राजदरबार में कैसे पधारी हैं ? आसन ग्रहण कीजिए महारानीजी ! आपका हमारे दरबार में स्वागत है । ऐसा लगता है कि आज कोई विशेष सन्देश लेकर यहाँ पधारी हैं ।

धनकुबेर द्वारा रत्नवृष्टि

स्वर्ग का दृश्य
अरे! मेरा सिंहासन आज कम्पित क्यों हो रहा है।
ओह! समझ गया, अयोध्या नगरी में तीर्थंकर प्रभु का जन्म हुआ है। चलो, सभी देवदेवियों जल्दी-चलो, अयोध्या चलकर हम सभी प्रभु का जन्म-कल्याणक मनाएंगे।
ऐरावत हाथी पर सवार होकर सौधर्म इन्द्र अपनी शचि इन्द्राणी एवं देवपरिवार के साथ अयोध्या जाते हुए।
शचि, तुम वास्तव में बड़ी भाग्यशालिनी हो कि तुम्हें प्रसूतिगृह में जाकर तीर्थंकर भगवान का प्रथम दर्शन प्राप्त होगा। देवि! शीघ्र जाकर शिशु को बाहर लाओ।
मैं शीघ्र जाकर प्रभु को बाहर लाती हूँ।
ओह! आज तो मैं धन्य हो गई। प्रभु का प्रथम दर्शन करके मेरा नारी-जीवन धन्य हो गया। जयहो, माता मरुदेवी की जय हो।
चलो, सुमेरुपर्वत पर प्रभु का अभिषेक करेंगे।
क्षीरसागर से भरकर १००८ कलशों द्वारा इन्द्र-इन्द्राणियों ने सुमेरुपर्वत पर प्रथम तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक किया और उनका "ऋषभदेव" यह नाम घोषित कर जयजयकार किया।

बाल क्रीड़ा एवं दिव्य भोजन

कल्पवृक्षों से फल न मिलना

कर्मभूमि में आजीविका के उपाय

सुनो आयुष्मन्तों! इसमें कुछ भी कठिन नहीं है। तुम्हें अब असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह क्रियाएं करनी होंगी। इसी से आजीविका चलेगी।
ठीक है प्रभो! आपकी आज्ञा हमें शिरोधार्य है।
कर्मभूमि का प्रारम्भ
असि क्रिया
मसि क्रिया
गन्ना पेलकर रस निकाला जा रहा है।
यह तो बड़ा मीठा रस है।
कृषि
विद्या
हे ब्रह्मा! प्रजापति! आपने हमें नया जीवन देकर जो कर्मभूमि की व्यवस्था बताई है, वह आपका उपकार हम लोग कभी नहीं भूल सकते।
वाणिज्य-व्यापार
शिल्प
उसी समय से धरती पर कर्मभूमि की व्यवस्था चल रही है।

जय हो, युवराज ऋषभदेव की जय हो
प्रभो ! आप धरती की प्रजा को अब विवाह विधि बताकर गृहस्थधर्म का संचालन कीजिए। तभी आगे सृष्टि व्यवस्था चलेगी।
पुत्र ऋषभकुमार ! हम चाहते हैं कि तुम विवाह करके गृहस्थ सुख का उपभोग करो। राजा कच्छ - महाकच्छ की यशस्वती और सुनन्दा ये दो सुन्दर बहनें हैं, वे हमें पसन्द हैं। तुम उनके साथ विवाह की स्वीकृति प्रदान करो
ॐ तथास्तु
अयोध्या से बारात चली
राजकुमार श्री ऋषभदेव का कच्छ देश में स्वागत है।
राजकुमारी यशस्वती और सुनन्दा ने आदि ब्रह्मा ऋषभकुमार के गले में वरमाला डालकर उनकी पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। देवता भी स्वर्गलोक से उनपर रत्नवृष्टि कर रहे हैं।

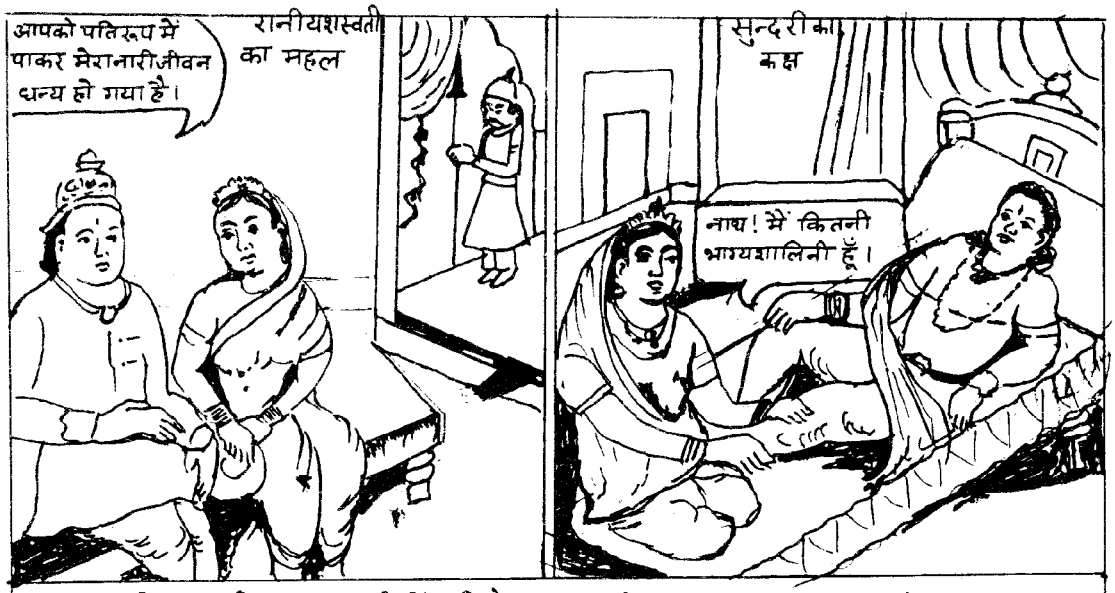

आज अयोध्या नगरी सचमुच खुशी में डूबी है, कुलवधुओं के साथ अपने युवराज आदिकुमार को देखकर।

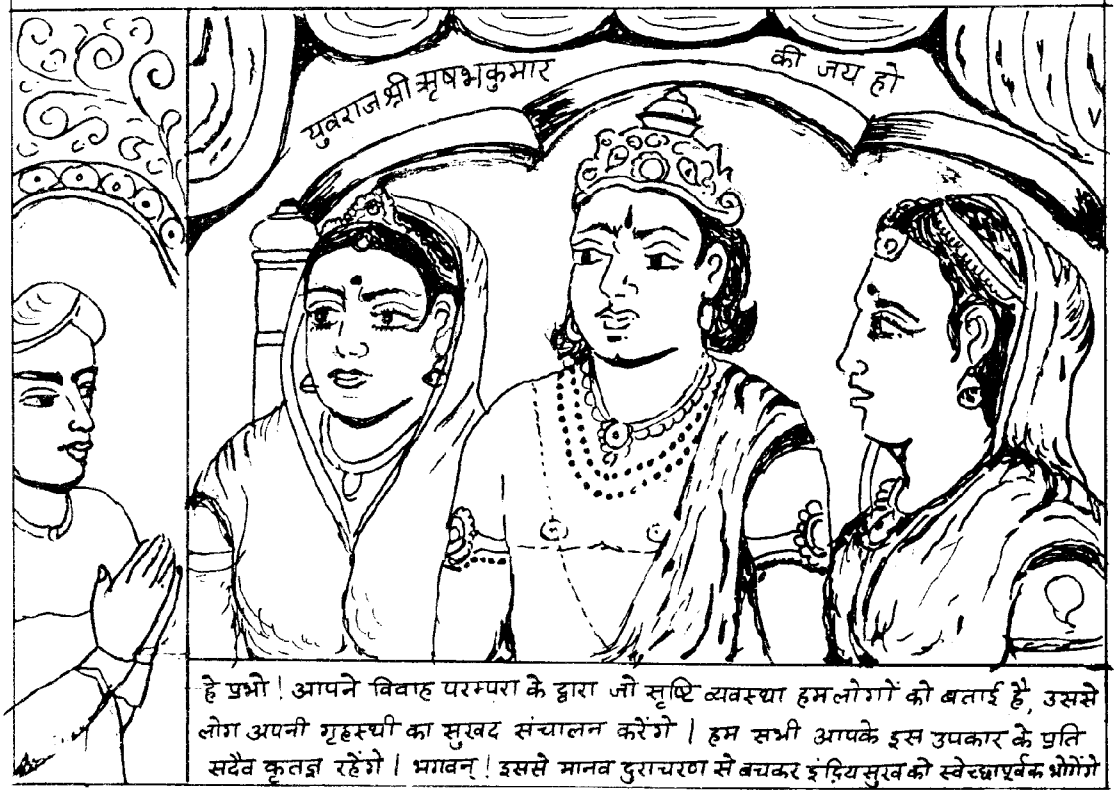

हे प्रभो! आपने विवाह परम्परा के द्वारा जो सृष्टि व्यवस्था हम लोगों को बताई है, उससे लोग अपनी गृहस्थी का सुखद संचालन करेंगे। हम सभी आपके इस उपकार के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेंगे। भगवन्! इससे मानव दुराचरण से बचकर इंद्रियसुख को स्वेच्छापूर्वक भोगेंगे

भगवान का राज्याभिषेक

राजनीति का उपदेश
देखो ! आप राजागण राजनीति में यह अवश्य ध्यान रखें कि प्रजा से उतना ही टैक्स लें जितने में उन्हें दुःख न हों । जैसे- भौंरा फूलों का पराग उतना ही चूसता है जिससे फूल सूखने न पावे ।
और हाँ ! राजनीति में सदैव धर्मनीति का भी पालन करना ।

इन्द्रों द्वारा देश-प्रदेश...की रचना

महाराज! आपकी बड़ी रानी जी ने पुत्ररत्न को जन्म दिया है। आपको बधाई हो!
तुमने बड़ा शुभ समाचार सुनाया है। लो, यह पुरस्कार स्वीकार करो!
पुत्र जन्मोत्सव पर अयोध्या में खुशियाँ छाई हैं।
मेरे घर में पुत्र का जन्म हुआ है।
आज मेरा मातृत्व धन्य हो गया है। पुत्र को जन्म देने में मुझे कोई कष्ट ही नहीं हुआ।
लो दासी! तुम भी यह पुरस्कार ग्रहण करो। ओह! आज हमारे लिए कितना शुभ अवसर है कि अयोध्या के भावी राजकुमार ने जन्म लिया है।
आज अपने राजा से पुरस्कार पाकर मैं सचमुच धन्य हो गई।
मंत्रिवर! आज तो बड़ा शुभ मुहूर्त है। मेरा यह पुत्र चक्रवर्ती बनेगा, और पूरे आर्यखण्ड का अधिपति होगा।
राजन्! आज तो आपकी ही जन्मतिथि चैत्र कृष्णा नवमी है। इसका नाम होगा, भरत

भगवान बाहुबली का जन्म

स्वर्ग से अनेक देवबालक आकर इन बच्चों के साथ क्रीडा किया करते थे। धीरे-धीरे ऋषभदेव के सभी पुत्र-पुत्रियाँ बड़े हो गये तब पिताजी ने इनके लिए अपनी पसन्द के सुन्दर-सुन्दर हार, कुण्डल, कड़े, बाजूबन्द आदि बहुत सारे गहने बनवाये और सबको पहनाकर अतिशय प्रसन्न हुए।

अक्षर लिपि व अंक लिपि का सूत्रपात

इस प्रकार युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने राज्यावस्था में ही अपनी ब्राह्मी पुत्री को अ आ इ ई ··· आदि लिपि विद्या एवं सुन्दरी पुत्री को १ २ ३ ४ ५ ···· आदि अंकविद्या सिखाकर शिक्षा का शुभारम्भ किया। तब से लेकर आज तक वह ब्राह्मी लिपि भारत की सर्वप्राचीन लिपि के नाम से प्रसिद्ध है तथा अंकविद्या अंकगणित के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है।

भरत-बाहु बली आदि पुत्रों को शस्त्र कला आदि समस्त विद्याओं की शिक्षा देते हुए भगवान ऋषभदेव

पुत्र-पुत्रियों के स्वर्णाभूषण

आभूषण परम्परा का शुभारंभ

नीलांजना नृत्य एवं वैराग्य

दीक्षा हेतु वन को प्रस्थान

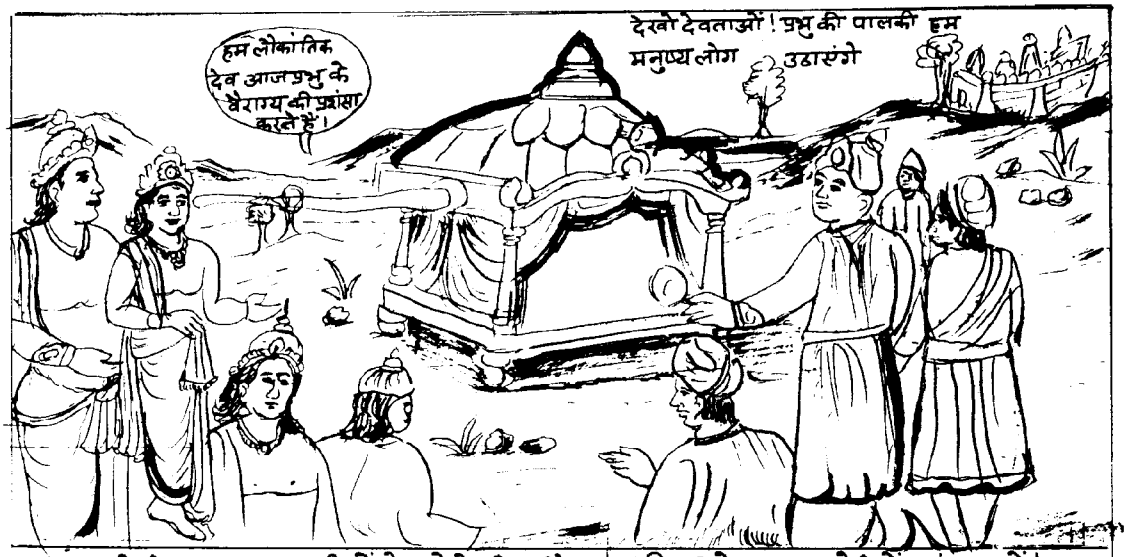

भगवान को दीक्षा वन तक पालकी में ले जाने हेतु देव और मनुष्यों में विवाद छिड़ गया, तो निर्णय के लिए सभी राजा नाभिराय के पास जाकर अपनी-अपनी बात कहते हैं।

नाभिराय ने कहा – सुनो देवों एवं मनुष्यों! यह चूँकि दीक्षा कल्याणक का अवसर है और देवतागण संयम का पालन कर नहीं सकते एवं मनुष्य लोग दीक्षा धारण कर सकते हैं इसलिए प्रथम पालकी मनुष्यों को ही उठाने का अधिकार है।

देव इतना सुनकर तुरन्त पीछे हट गये। तब सबसे पहले भगवान की पालकी मनुष्यों ने उठाई पुनः ~~विद्याधरों ने उठाई~~, उसके बाद देवताओं ने पालकी उठाकर भगवान को "प्रयाग" के "सिद्धार्थ" वन में पहुँचा दिया।

प्रयाग वटवृक्ष के नीचे दीक्षा

प्रयाग में वट वृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव के साथ चार हजार राजाओं ने भी जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली।

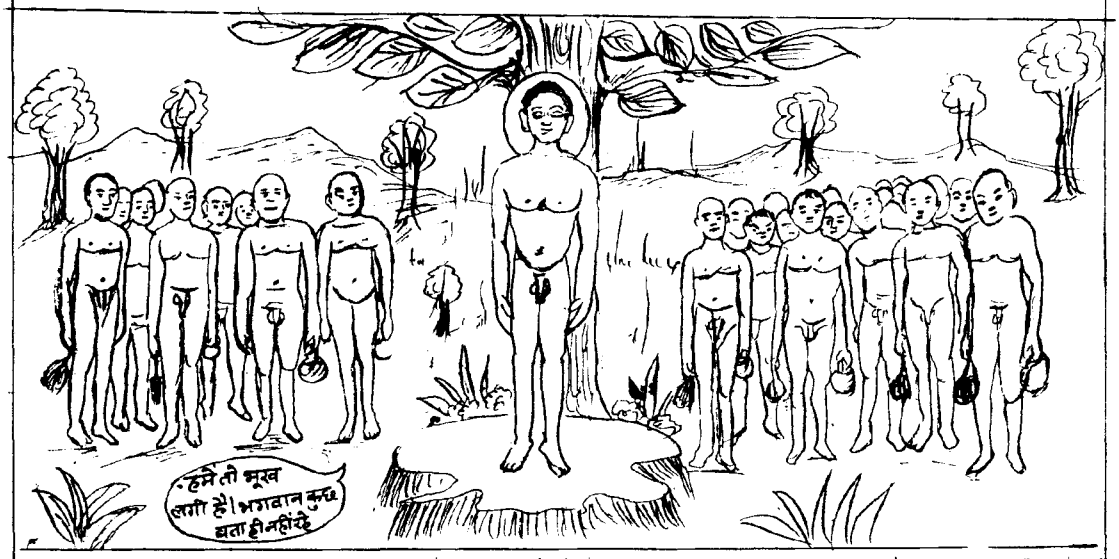

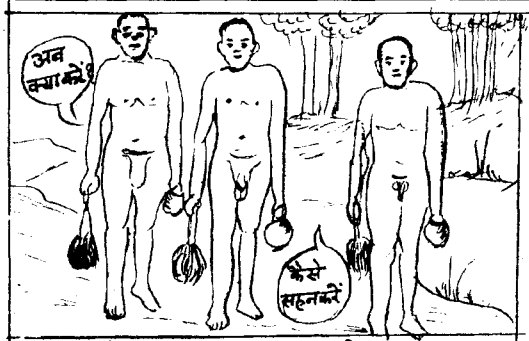

भगवान तो कुछ बोल ही नहीं रहे हैं कि तुम लोग क्या करो ?

फिर तो हमें जो कुछ समझ आएगा वही करेंगे। भगवान एकदम मौन होकर तपस्या में लीन हैं।

मुनियों की यह विचलित अवस्था देखकर वनदेवता ने प्रगट होकर कहा – आप इस जिनमुद्रा में कोई अनर्गल चर्या न करें। यह तीर्थंकर प्रभु की महान मुद्रा है। यह सुनकर उन साधुओं ने मुनिवेश छोड़कर अन्य सन्यासियों का वेश धारण कर लिया।

पुनः छह माह का योग समापन करके महामुनि श्री ऋषभदेव आहारचर्या को बतलाने हेतु निकल पड़े किन्तु अज्ञानतावश लोग उनसे कहते कि - हे भगवन ! आइए, पधारिये, ये वस्त्र - आभूषण आदि ग्रहण कीजिए।

भगवन् ! यह सुन्दर भोजन और फल ग्रहण कीजिए।

किन्तु मुनिराज ऋषभदेव जी मुस्करा कर आगे चल देते और इस प्रकार १वर्ष ३९ दिन तक उन्हें निराहार रहना पड़ा पुनः वे हस्तिनापुर नगरी में पहुँचते हैं।

हस्तिनापुर के युवराज श्रेयांस ने अपने स्वप्नों में सुमेरु पर्वत, कल्पवृक्ष, सिंह, बैल, सूर्य-चन्द्र, समुद्र, अष्टमंगल द्रव्य सहित व्यन्तर देव देखा।

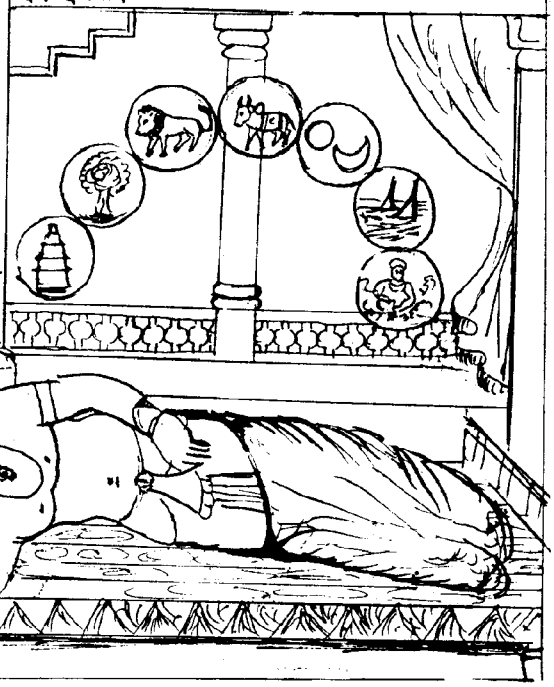

हस्तिनापुर में प्रथम आहार

अक्षयतृतीया को आहारदान

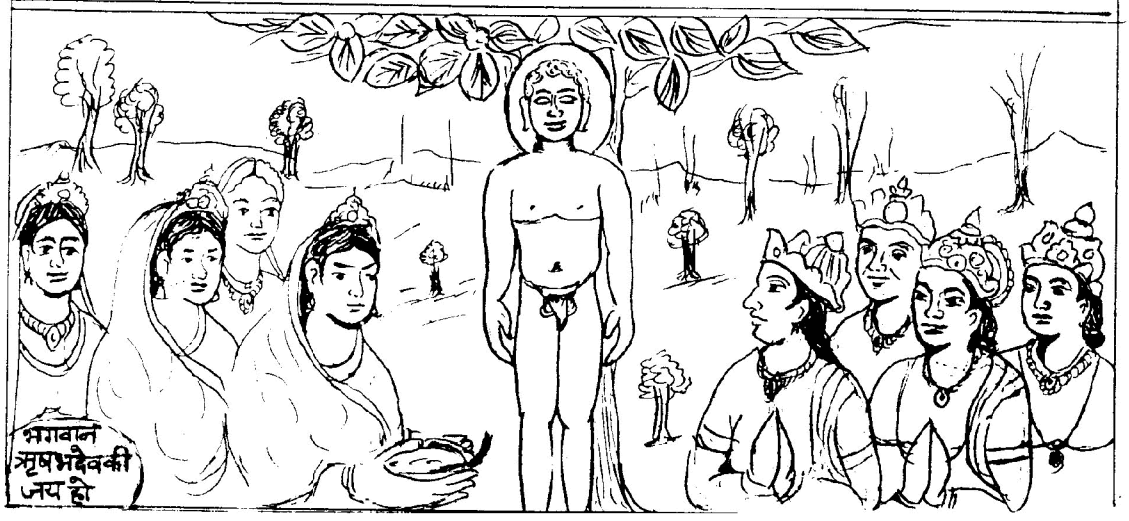

केवलज्ञान एवं समवसरण रचना

केवलज्ञान होते ही कुबेर ने आकाश में अधर समवसरण की रचना कर दी और भगवान उसमें विराजमान हो गये। भगवान की ऊँकारमयी दिव्यध्वनि सात सौ अठारह भाषाओं में खिरी जिसे देव, मनुष्य, पशु-पक्षी सभी ने ग्रहण किया और मिश्री के समान मीठा फल प्राप्त किया।

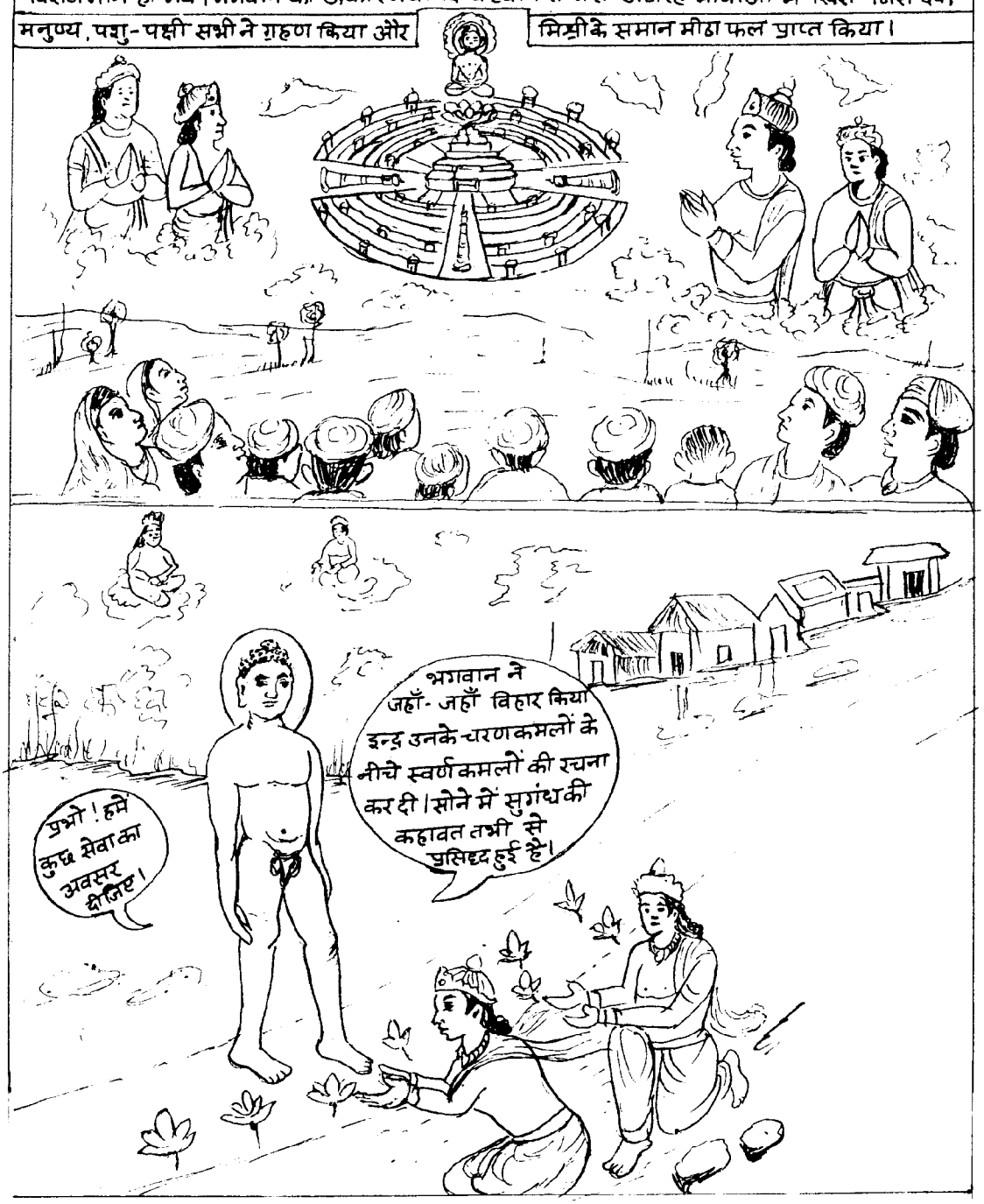

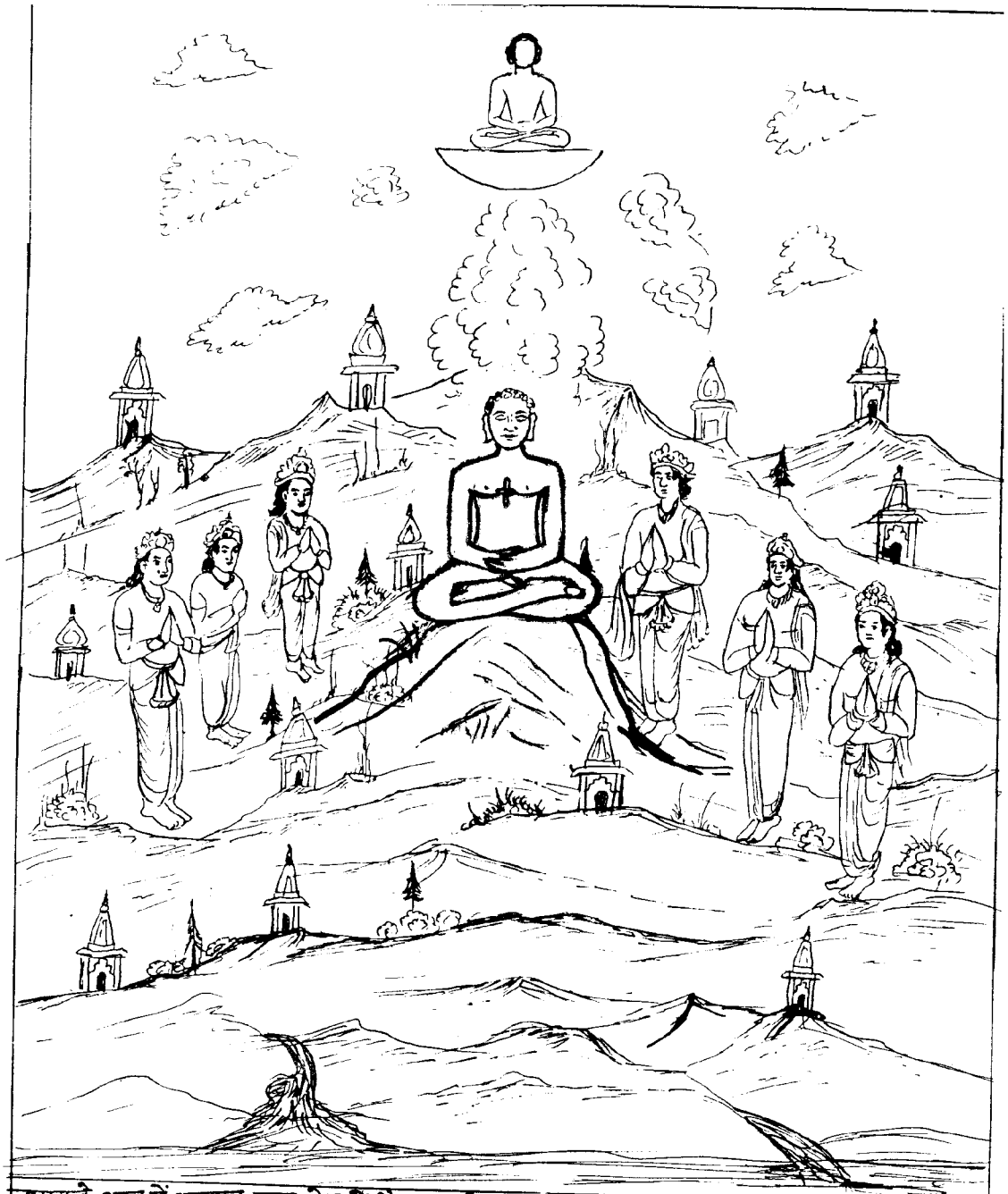

आयु के अन्त में भगवान ऋषभदेव ने कैलाशपर्वत पर जाकर चौदह दिन तक योगनिरोध करके माघ कृष्णा चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय के समय आठों कर्मों का नाशकर मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया। सिद्धशिला पर विराजमान वे सिद्धपरमात्मा अब संसार में कभी वापस नहीं आएंगे।